कला के तत्त्व

साहित्य में शब्द और अर्थसार रचना को प्रभाहशाली बनाकर अभिव्यक्ति में सहायक होते है उसी प्रकार चित्र रचना में कलागत तत्व के बिना अभिव्यक्ति अपूर्ण है| कलाकार के भाव, कल्पना, संम्वेग, अमूर्त होते हैं जिन्हें आकार प्रदान करने के लिए रेखा, रंग, रूप इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है| कला के सभी तत्वों का अपना एक महत्व होता है जिसके कुशलता पूर्वक प्रयोग से कलाकार किसी चित्र की रचना करता है| चित्रकला, मूर्तिकला, लोककला या वास्तुकला प्रत्येक में इन तत्वों का प्रयोग किया जाता है|

चित्रकला के प्रमुख तत्व: **रेखा**(Laine)- रेखा प्रारंभ से ही चित्रकला के मूलाधार के रूप में मानी जाती है| सर्वप्रथम आदिमानव ने रेखा का प्रयोग गुफाओ मे चित्ररचना हेतु किया है| युरोपियन चित्रों में रंगों तथा छायाप्रकाश द्वारा त्रिआयामी प्रभाव दर्शाने का प्रयास किया जाता है परंतु भारतीय चित्रों में रेखा का प्रयोग खूबसूरत ढंग से किया गया है| कला पक्ष के अंतर्गत रेखा का प्रतीकात्मक महत्व है| इनके द्वारा चित्रों मे दुरी तथा निकटता के साथ मानवीय भावों को भी दर्शाया जाता है|

रूप(Form)- पर्यावरण मे प्रत्येक वस्तु किस रूप मे रहता है| रूप का एक आकार होता है जिसकी लंबाई एव चौराई होती है| रूप काल्पनिक भी हो सकता है और वास्तिवक भी| रूप का निर्माण होते ही धरातल सक्रिय और सहायक आकारों मे विभाजित हो जाता है| जो वस्तु या आकृति चित्रस्थल पर चित्रित की जाती है सक्रिय या सहायक अन्तराल कहलाती है तथा अन्य स्थान सहायक अन्तराल(spase) कहलाता है| रूप के द्वारा ही कलाकार अपने मन के भावों को चित्र मे उकेर सकता है| सर्वप्रथम आकार ही कलाकार के मस्तिष्क मे आता है उसके बाद ही रेखा, रंग आदि तत्वों के द्वारा चित्रण किया जाता है| रूप के दर्शनात्मक और भावनात्मक दोनों प्रभाव परते हैं|

रंग(Colour)- मानव जीवन के साथ साथ चित्रकला मे रंग का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है| संसार की प्रत्येक वस्तु कोई न रंग लिए होती है| रंग मानव जीवन एवं चित्र का सार है| जिस प्रकार कविता के लिए शब्द, संगीत के लिए लय तथा काव्य के लिए रस की आवश्यकता होती है उसी प्रकार चित्र के लिए रंग का होना अनिवार्य है| रंग के बिना चित्र नीरस है| रंग प्रकाश का गुण है, प्रकाश किरणों के द्वारा ही हमें कोई रंग दिखाई देता है| **रंग** के तीन प्रमुख प्रकार हैं- **(क)प्राथमिक रंग(primary colour)**-लाल, पीला एवं नीला **(ख)द्वित्यक रंग(Secondary colour)-** नारंगी, हरा एवं बैंगनी प्राथमिक एवं द्वित्यक रंगों को मिलाने से हमें तृतीयक रंग प्राप्त होते हैं| रंगों के मनोवैज्ञानिक प्रभाव होते हैं| मानवीय भावों को हम चित्रों मे रंगों के कुशलप्रयोग से दर्शा सकते है|

पोत/ बनावट(Texture)- किसी वस्तु के धरातल की बुनावट या विशेषता को पोत(Texture) कहते हैं| प्रकृति मे मौजूद प्रत्येक प्रदार्थ का अपना अलग गुण होता है जैसे पत्थर मे कठोरता और ठोसपन होता है इसके विपरीत फूलों मे कोमलता और नाजुकता होता है| इसी से हम प्रकृति मे मौजूद वस्तु में अंतर या पहचान कर पाते हैं| पोत(Texture) के कारण ही हम चित्रों मे वस्तु को वास्तविकता मे अंकित कर पाते हैं| texture साधारणत: तीन प्रकार के माने गए हैं- **प्राप्त**, **अनुकृत** और **सृजित**| **प्राप्त पोत(texture)** इस प्रकार के पोत मे प्रकृति तथा मानव निर्मित्त धरातल आते हैं| प्राप्त पोत मे पत्थर, पत्ते, तारपत्र के माध्यम से धरातल से बुनावट स्वत: प्राप्त होते हैं| **अनुकृत पोत(texture)** चित्र मे यथार्थ को हु- ब-हू चित्रित किये जाने के लिए अनुकृत पोत का प्रयोग करते हैं| इसमे चित्रकार पहले प्रकृति का अध्यन करता है फिर उसी प्रकार की बनावट को चित्र मे बनाकर वास्तविकता लाने का प्रयास करता है| **सृजित पोत(texture)** इस पोत को कलाकार स्वंय सृजित करता है| कलाकार कलम, पैंसिल या ब्रश आदि की सहायता धरातल पर भिन्न भिन्न पोत(texture) का निर्माण करता है| ब्रश के प्रभाह(stroke) के द्वारा भी हम सृजित पोत का निर्माण कर सकते हैं|

अंतराल(स्पेस)- कलाकार के लिए रेखा, रूप, रंग जैसे तत्वों से अभिव्यक्ति के लिए एक आधार चाहिए वह है धरातल पर कलाकार अपने लिए अंतराल निर्धारित करता है| अंतराल के बिना चित्र संयोजन असंभव होता है| चित्र धरातल का विभाजन दो प्रकार से होता है- **सम विभाजन** इस विभाजन मे चित्र धरातल को बराबर भागों मे विभाजित किया जाता ह| **असम विभाजन** इस धरातल विभाजन मे कलाकार स्वतंत्रत रहता है तथा जैसा चाहे वैसा विभाजन कर सकता है| आधुनिक काल मे इस प्रकार का अंतराल विभाजन(space division) अधिक होता है| इसमे सृजनात्मकता अधिक रहती है| सम तथा असम विभाजन के अतिरिक्त चित्रभूमि को अलग करने का एक और सिधान्त है जो स्वर्णिम विभाजन के नाम से जाना जाता है जिनका विकास प्राचीन यूनानी कलाकारों द्वारा किया गया| चित्रण प्रक्रिया मे जिस विभाजन का मुख्य स्थान होता है वह सक्रिय अंतराल तथा अन्य सहायक अंतराल कहलाता है|

सरोज कुमार

सहायक प्राध्यापक (ललित कला), शिक्षा संकाय
राजेंद्र मिश्रा कालेज, सहरसा
दिनांक: 21.04.2020